उर्मिला

राम की कथा में सबको पद प्रतिष्ठा यश मिला ।
पर उपेक्षित रही सदा लखन की उर्मिला ।।

राम वन को जब चले तो जानकी भी चल पड़ी
उर्मिला बिचारी देखती रही खड़ी-खड़ी
तब लखन ने आ कहा कि 'है परीक्षा अब तेरी
'ध्यान अब तुम ही रखोगी मांओं का प्रिये मेरी'
चल पड़े लखन भी उसको विरह का गरल पिला।
पर उपेक्षित रही सदा लखन की उर्मिला।।

किस तरह दिवस कटे वे रातें किस तरह कटी
कौन जानता है उर्मिला कहाँ-कहाँ बँटी
तन का कोयला किया वो बावरी सी हो गई
आंसुओं को पीते पीते वो सुध भी खो गई
और कभी किसी से भी किया नहीं कोई गिला।
पर उपेक्षित रही सदा लखन की उर्मिला ।।

पंथ वो दिखा गई सबक कई सिखा गई
कौल जो लखन से थे वो कौल भी निभा गई
त्याग सेवा धर्म की बनी वो इक शिला प्रबल
उस महावियोगिनी को समझना कहाँ सरल
उर्मिला वही समझ सके जो बने उर्मिला।
उर्मिला वही समझ सके जो बने उर्मिला।।

-धनराज दाधीच